(1) एयर के विचारों में विकसित तार्किक अनुभववाद

भूमिका—तार्किक भाववाद में जिस प्रकार के विचार को प्रश्रय मिला, उसी का विचार इंगलैंड में भी पनपा—विशेषतः ए॰ जे॰ एयर के विचारों में। एयर ने अपने को तार्किक भाववादी नहीं कहा, बल्कि उसके विचारों की विशिष्टता, ब्रिटिश दर्शन की परम्परा के अनुसार, तार्किक भाववादी विचारों को अनुभववाद के संदर्भ में बिठाने में हैं। यही कारण है कि उनके विचारों को तार्किक अनुभववाद (Logical Empiricism) कहा जाता है, तथा यही कारण है कि इसकी विवेचना अलग से की जा रही है। 1936 में एयर ने अपनी पुस्तक 'Language Truth and Logic' लिखी। उनके विचारों पर कुछ टिप्पणियाँ आलोचनायें हुईं, जिनके आलोक में एयर ने अपनी पुस्तक का परिवर्तित रूप 1946 में प्रकाशित किया। एयर का तार्किक अनुभववाद इसी पुस्तक में प्रकाश में आया है, और यहाँ भी हम उसी पुस्तक का अनुशीलन करेंगे।

1. एयर के अनुसार अर्थ का सत्यापन सिद्धान्त

एयर के तार्किक अनुभववाद के मूल में अर्थ का सत्यापन सिद्धान्त (The Principle of Verification) ही है। तार्किक भाववाद के समान एयर भी स्वीकारते हैं कि यह सिद्धान्त एक ऐसा मापदण्ड प्रस्तुत करता है जिससे वाक्यों की अर्थपूर्णता एवं अर्थहीनता में भेद किया जा सकता है। इस सिद्धान्त का सबसे सरल प्रतिपादन यह है कि किसी भी वाक्य में शाब्दिक अर्थपूर्णता तब होती है जब उस वाक्य में व्यक्त प्रस्तावना (proposition) या तो विश्लेषणात्मक हो या ऐसा हो कि उसकी अनुभव-परीक्षा हो सके।

किन्तु, इस रूप से उसे प्रतिपादन करने में एक कठिनाई है। वाक्य जब तक अर्थपूर्ण न हो, वह प्रस्तावना (Proposition) व्यक्त नहीं करता। हर प्रस्तावना या तो सत्य या असत्य होती है, और जो वाक्य सत्य या असत्य हो वह तो अर्थपूर्ण रहता ही है। अतः यदि उपरोक्त रूप में इस सिद्धान्त को प्रतिपादित किया जाय तो अर्थपूर्णता के मापदण्ड के रूप में यह अर्थश्रेष्ठ सिद्ध होगा क्योंकि तब इस मापदण्ड का प्रयोग उन वाक्यों पर नहीं हो सकेगा जिनमें प्रस्तावना व्यक्त नहीं हुई है।

इस कठिनाई के विवेचन के आधार पर एयर इस सिद्धान्त के प्रतिपादन का एक दूसरा मार्ग अपनाते हैं। उनके अनुसार अर्थ के सत्यापन सिद्धान्त का केन्द्रविन्दु 'वाक्य' नहीं है, '**कथन**' (Statement) है। **वाक्य** (Sentence) तब बनते हैं जब शब्दों को व्याकरण के नियमों के अनुकूल सजाया जाय, किन्तु यदि वाक्य से कुछ कहा जा रहा है, कोई सूचना दी जा रही हैं, **अर्थात् सूचनात्मक वाक्य** (Indicative Sentences) को **कथन** (Statement) कहा जा सकता है—वह अर्थपूर्ण हो या नहीं हो। फलतः यदि ऐसें किसी वाक्य का अनुवाद किसी दूसरे वाक्य में हो जाता है, तो कहा जा सकता है कि वे

Scanned with CamScanner

Scanned by TapScanner

दोनों वाक्य एक ही **कथन** (Statement) को व्यक्त कर रहे हैं। यहाँ **कथन** (Statement) तथा **प्रतिज्ञप्ति** (Proposition) का भी भेद स्पष्ट हो जाता है क्योंकि तब **प्रतिज्ञप्ति** (Proposition) का प्रयोग सीमित हो जायगा। उसका अर्थपूर्ण वाक्यों में जो व्यक्त होता है—उसी तक सीमित रहेगा। इस प्रकार **प्रतिज्ञप्ति कथनों** की एक **उपजाति** (Subclass) होगी।

तो, अब कहा जा सकता है कि सत्यापन सिद्धान्त का वास्तविक केन्द्र-बिन्दु **कथन** (Statement) है। यह अर्थपूर्ण कथनों तथा अर्थहीन कथनों के भेद का एक आधार—एक मापदण्ड प्रस्तुत करता है। ऐसा भी कहा जा सकता है कि यह सिद्धान्त एक ऐसा मापदण्ड देता है जिसके आधार पर हम **प्रतिज्ञप्ति** (Proposition) तथा जो प्रतिज्ञप्ति नहीं है—इन दोनों में भेद कर-सकें।

वह मापदण्ड क्या है? इसी प्रश्न का उत्तर अर्थ के सत्यापन-सिद्धान्त में दिया गया है। अब हम प्रारंभ में दिये गये इस सिद्धान्त के प्रारंभिक प्रतिपादन को इस रूप में रख सकते हैं, 'कोई **कथन**' शाब्दिक दृष्टि से अर्थपूर्ण तभी हो सकता है जब वह या तो विश्लेषणात्मक (analytic) हो, या उसकी अनुभव-परीक्षा हो सके (enpirically verifiable)। अब अनुभव-परीक्षा' के तात्पर्य को स्पष्ट करना अनिवार्य है। एयर ने अपने सत्यापन-सिद्धान्त के प्रतिपादन में इस पर विशेष ध्यान दिया है। यहाँ तक कि 1936 में अपनी पुस्तक के प्रकाशन के बाद जो 'अनुभव-परीक्षा' से संबंधित आपत्तियाँ उठायी गयीं या संशय किये गये, उनके आलोक में 1946 के पुस्तक-संस्करण में उन्होंने कुछ स्पष्टीकरण भी प्रस्तुत किया।

उनका कहना है कि तथ्यात्मक कथनों की अर्थपूर्णता का आधार 'अनुभव-परीक्षा' में है। इसका अर्थ है कि किसी व्यक्ति के लिये वह कथन अर्थपूर्ण तभी हो सकता है जब वह जाने कि वह कथन जो कहना चाह रहा है, जो व्यक्त करना चाह रहा है उसकी परीक्षा कैसे होगी। इसका अर्थ हुआ कि उसे यह जानना है कि किस प्रकार के निरीक्षण आदि के आधार पर वह उस कथन को सत्य या असत्य स्वीकार कर सकता है। इसका अर्थ है कि यह कथन अर्थपूर्ण तभी हो सकता है जब इसमें जो कहा जा रहा है वह उसके संभावित अनुभव के या तो अनुरूप हो या उसके प्रतिकूल न पड़े। इस बात का एक दूसरा पक्ष भी है। **यदि वह पुनरुक्ति** (Tautology) **नहीं है**, फिर भी इसे सत्य या असत्य स्वीकारने से किसी भविष्य संभावित अनुभव में कोई अन्तर न पड़े—यदि इसका सत्य या असत्य होना दोनों इसके हर सम्भावित अनुभव से संगत (consistent) हो, तो यह कथन ही नहीं है—छद्म-कथन है।

उदाहरणतः हम कहते हैं वह पुस्तक दूसरे कमरे में है। अब हम जानते हैं कि किस प्रकार के संभावित अनुभव से इसमें जो कहा जा रहा है उसकी सत्यता या असत्यता स्थापित होगी। इस आधार पर इस वाक्य को अर्थपूर्ण कहा जा सकता है। अब हम कहते हैं 'पंचम जार्ज सद्गुण का वर्गमूल हैं'। अब हम किसी ऐसे अनुभव की कल्पना नहीं कर सकते जिससे यह वाक्य सत्य या असत्य मानें। इस वाक्य को सत्य मान कर देखें या असत्य मान कर देखें—किसी भविष्य के अनुभव में कोई अन्तर नहीं पड़ता। इसकी सत्यता या असत्यता सभी संभावित अनुभव के अनुरूप है। अतः यह कथन ही नहीं है, छद्म-कथन है, कुछ कह नहीं रहा है, अर्थहीन है।

Scanned with CamScanner

Scanned by TapScanner

'परीक्षणीयता' के इस प्रारंभिक प्रतिपादन के पश्चात् एयर कुछ स्पष्टीकरण प्रस्तुत करते हैं। सबसे पहले वे एक भेद करते हैं **'वास्तविक या व्यावहारिक परीक्षणीयता'** (Practical Variflability) तथा **'सिद्धान्त में परीक्षणीयता'** (Verifiability in Principle) के बीच। सामान्यतः जब भी परीक्षणीयता की बात होती है तो हम वास्तविक या व्यावहारिक परीक्षणीयता समझते हैं। ऐसा होता भी है कि अधिकांश उदाहरणों में यदि हम कष्ट करें तो परीक्षण कर सकते हैं। जैसे ऊपर दिये उदाहरण 'यह पुस्तक दूसरे कमरे में हैं' के लिये यदि हम चाहें तो वस्तुतः दूसरे कमरे में जाकर यह परीक्षा कर सकते हैं कि इस कथन में जो कहा जा रहा है वह सत्य है या असत्य। किन्तु बहुत-से ऐसे उदाहरण हो सकते हैं जिसमें हम चाह कर भी वास्तविक परीक्षा नहीं कर सकते। एयर ने उदाहरण लिया है, 'चन्द्रमा के पिछले भाग में पर्वत-शृंखला है। [स्मरण रखना है कि 1936-1946 में जब यह सिद्धान्त प्रतिपादित हो रहा था उस समय तक चन्द्रमा तक पहुँचने की कोई संभावना नहीं थी] उनका कहना है कि हम चाहें तब भी इसमें जो कहा जा रहा है उसकी वास्तविक परीक्षा नहीं कर सकते। किन्तु इसके कारण यह कथन अर्थहीन नहीं बन जाता। एयर का कहना है कि वैसा इसलिये होता है कि कम-से-कम हम सोच सकते हैं कि किस प्रकार के निरीक्षणों के द्वारा इस कथन की परीक्षा हो सकती है [इसी आधार पर इस कथन की वास्तविक परीक्षा की संभावना भी बाद में उभर आयी] अतः यह व्यावहारिक रूप में परीक्षणीय न भी हो, सिद्धान्त में परीक्षणीय है। इसके विपरीत इस कथन को देखें, ''निरपेक्ष सत्त् हर विकास एवं परिवर्त्तन के पीछे है।'' हम सिद्धान्त में ऐसे किसी अनुभव की कल्पना नहीं कर सकते जिससे इसकी परीक्षा हो सके। अंतः इसके—सिद्धान्त में परीक्षणीयता' (Verification in Principle) की भी संभावना नहीं है। इसी कारण यह अर्थहीन है। अतः एयर के अनुसार पहला स्पष्टीकरण तो यह है कि वस्तुतः सिद्धान्त में परीक्षणीय होने पर भी वाक्य अर्थपूर्ण हो जाता है। परीक्षणीयता वास्तविक या व्यवहार में हो तो ठीक ही है, किन्तु जहाँ संभव नहीं हो पर सिद्धान्त में परीक्षणीयता संभव हो, वह भी कथन अर्थपूर्ण ही होगा।

एयर ने दूसरा स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया है परीक्षणीयता के **सुदृढ़-अर्थ** (Strong Sense) तथा **निर्बल अर्थ** (Weak Sense) में भेद करके। कोई कथन सुदृढ अर्थ में परीक्षणीय तभी होता है जब अनुभव से इसकी सत्यता निर्णायक एवं अकाट्य ढंग से स्थापित हो जाय। इसके विपरीत यदि अनुभव उस कथन की संभावना को स्थापित करता है, यदि उसके सत्य होने की संभावना को सूचित करता है तो यह कथन निर्बल अर्थ में परीक्षणीय है।

एयर को अवगति है कि कुछ तार्किक भाववादी परीक्षणीयता को उसके सुदृढ़ अर्थ में लेते हैं। किन्तु एयर को इसमें कठिनाई दिखाई देती है। उन्हें लगता है कुछ सामान्य वैज्ञानिक नियम, कुछ सामान्य तथ्यात्मक कथन, कुछ ऐतिहासिक कथन ऐसे हैं जिन्हें किसी अनुभव के द्वारा निर्णायक, निश्चित अथवा अकाट्य ढंग से स्थापित नहीं किया जा सकता, अर्थात् उनकी परीक्षणीयता सुदृढ़ अर्थ में संभव ही नहीं है। उदाहरणतः इन उक्तियों को लें, 'सभी मनुष्य मरणशील हैं' 'संखिया जहरीला है', 'हर शरीर गर्म होने पर फैलता है' आदि। हम चाहे जितना भी निरीक्षण करें—जितना भी अनुभव का उदाहरण दें—इन उक्तियों की सत्यता निस्संदेह तथा पूर्णतया निश्चित रूप में स्थापित नहीं हो सकती। इस आधार पर यदि इन्हें अर्थहीन कह दिया जाय तो यह तो बेतुकी बात होगी।

Scanned with CamScanner

Scanned by TapScanner

उसी प्रकार इतिहास के कथनों को देखें—किसी भी प्रकार इन कथनों की सुदृढ़ अर्थ में अनुभव-परीक्षा संभव नहीं हैं, इनकी सत्यता पूर्णतया निश्चित ढंग से स्थापित नहीं होगी। किन्तु इस आधार पर इन्हें अर्थहीन कह देना तो इतिहास के साथ अन्याय होगा।

हमने तार्किक भाववाद के विवेचन में यह कहा है कि इस कठिनाई से बच निकलने की चेष्टा में **स्लिक** ने एक विचित्र बात की थी। उनका कहना है कि ये सभी वाक्य निरर्थक तो हैं ही—तब यह कि वे **महत्वपूर्ण निरर्थक** (Important Nonsense) हैं। किन्तु एयर इस विचार का हवाला देते हुए कहते हैं कि यह तो कोई समाधान हुआ ही नहीं। 'महत्त्वपूर्ण' कह देने से इनकी अर्थहीनता समाप्त तो नहीं होती। स्पष्टतः ये कथन पूर्णतया अर्थपूर्ण प्रतीत भी होते हैं।

इस कठिनाई के निराकरण के प्रयत्न में **कार्ल पौपर** ने **मिथ्याकरण** (Falsifiability) का सिद्धान्त दिया था। उनका कहना है कि इन कथनों की सुदृढ़ अर्थ में परीक्षणीयता तो संभव नहीं ही है, यह संभावना है कि यदि एक भी विपरीत उदाहरण मिला तो ये कथन मिथ्या सिद्ध हो जायेगे। अतः वे मिथ्याकरण की संभावना (Falsifiability) को अर्थपूर्णता का आधार बना देते हैं। एयर को यह भी मान्य नहीं। उनका कहना है कि **मिथ्याकरण** अपने में अर्थपूर्णता का यथेष्ट आधार बन ही नहीं सकता। यदि हम किसी अनुभव या निरीक्षण को किसी कथन के मिथ्या सिद्ध करने का आधार मानते हैं, तो इसका अर्थ है कि हम कुछ बातों के अस्तित्व को स्वीकार कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त यदि कोई एक आनुभविक उदाहरण किसी कथन के विपरीत भी पड़े, फिर भी उस आधार पर उस कथन की संभावना पूर्णतया समाप्त नहीं हो जाती। अतः कार्ल पौपर के इस विचार का भी एयर खण्डन करते हैं।

एयर इस कठिनाई के निराकरण का दूसरा ही मार्ग अपनाते हैं। वस्तुतः सुदृढ़ में परीक्षणीयता (Strong Sense of Verification) को अर्थपूर्णता का आधार मानने की आवश्यकता ही नहीं है। कोई कथन यदि सुदृढ़ अर्थ में परीक्षणीय है भी, तो वह उसकी अर्थपूर्णता का आधार नहीं हैं। अर्थपूर्णता तो निर्बल अर्थ में परीक्षणीयता की संभावना के रहने पर भी स्थापित हो जायगी। यदि कोई कथन सुदृढ़ अर्थ में परीक्षणीय है तो वह निर्बल अर्थ में तो परीक्षणीय है ही। अर्थात् इस दृष्टि से अर्थपूर्णता की कसौटी निर्बल अर्थ में परीक्षणीयता ही बन जाती है। एयर कहते हैं, कथन अर्थपूर्ण है या नहीं—यह जानने के लिए हमें इस प्रश्न को नहीं उठाना है कि कौन-से निरीक्षण—अनुभव से यह कथन निश्चित रूप में सत्य या निश्चित रूप में असत्य सिद्ध हो जाएगा, बल्कि हमें इस प्रश्न को उठाना है कि क्या कोई ऐसा अनुभव संभावित है जो इसकी सत्यता-असत्यता के निर्धारण में प्रासंगिक हो। ऐसे अनुभव की संभावना ही कथन को अर्थपूर्ण-सिद्ध कर देगी। हाँ, यदि हमें इस प्रश्न का निषेधात्मक उत्तर मिले—यदि हम किसी ऐसे अनुभव की संभावना की ओर संकेत न कर सकें जो उस कथन की सत्यता-असत्यता-निर्धारण के लिये प्रासंगिक हो तब हमें स्वीकारना पड़ेगा कि वह कथन अर्थहीन है।

अपने इस भेद के विषय में एयर को पुनः विचारना पड़ा। अपनी पुस्तक, '*Language, Truth and Logic*' के 1946 के संस्करण में उन्होंने इस भेद पर कुछ नया प्रकाश दिया। इस प्रकाश के आलोक में उनके सत्यापन-सिद्धान्त का प्रतिपादन भी कुछ नये रूप में प्रस्तुत हुआ।

Scanned with CamScanner

Scanned by TapScanner

इस संस्करण में वे कहते हैं कि परीक्षणीयता के **सुदृढ़ अर्थ** तथा **निर्बल अर्थ** में जो उन्होंने भेद किया है वह एक दृष्टि से अनावश्यक प्रतीत होता है। उन्हें यह सूझता है कि उन्होंने उसी पुस्तक में यह भी स्थापित करने की चेष्टा की है कि हर तथ्यात्मक कथन अथवा **आनुभविक प्रतिज्ञप्ति** (Empirical Proposition) एक प्रकार से प्राक्कल्पना (Hypothesis) ही है जिसकी अनुभव-परीक्षा सदा होती रह सकती है। इसका भी अर्थ है कि कोई आनुभविक कथन पूर्णतया निश्चित एवं अकाट्य रूप में परीक्षणीय नहीं है। इसका अर्थ होता है कि सुदृढ़ अर्थ में परीक्षणीयता का कोई अर्थ नहीं रह जाता क्योंकि उसका कोई उदाहरण उपलब्ध नहीं होता। अतः ऐसा प्रतीत होता है कि परीक्षणीयता के सुदृढ़ तथा निर्बल अर्थों का भेद अनावश्यक है। जिसे निर्बल अर्थ कहा गया है उसी में परीक्षणीयता की संभावना कथनों को अर्थपूर्ण बना देती है।

इतना सब कहते हुए भी एयर परीक्षणीयता के सुदृढ़ अर्थ को भी त्यागते नहीं हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि आनुभविक कथनों में कम-से-कम एक वर्ग ऐसा है जिसके विषय में कहा जा सकता है कि वहाँ परीक्षणीयता सुदृढ़ अर्थ में (conclusive verification) संभव है। इन्हें एयर ने **आधारित प्रतिज्ञप्ति** (Basic Proposition) कहा है। इन प्रतिज्ञप्तियों में किसी विशेष अनुभव में जो अनुभूत होता हो वह व्यक्त होता है, अतः कहा जा सकता है कि उस विशेष अनुभव से सुदृढ़ अर्थ में उसकी परीक्षा हो जाती है।

किन्तु एयर यह स्वीकारते हैं कि आधारिक-प्रतिज्ञप्ति तो बहुत थोड़े ही हो सकते हैं, तथा इनके संबंध में परीक्षणीयता अथवा अर्थपूर्णता का प्रश्न भी नहीं उठता। हमारी सामान्य आनुभविक उक्तियाँ जिनकी अर्थपूर्णता-अर्थहीनता का प्रश्न उठाया जाता हैं, वे अपनी अर्थपूर्णता के लिये अन्ततः निर्बल अर्थ में परीक्षणीयता पर भी निर्भर हैं। अतः कहा जा सकता है कि कोई कथन अर्थपूर्ण तभी है जब कोई अनुभव ऐसा हो जो उस कथन की सत्यता-असत्यता के लिये **प्रासंगिक** हो।

एयर ने इसे और स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है क्योंकि उन्हें लगता है कि यह शब्द **'प्रासंगिक'** (Relevent) भी अस्पष्ट है। उन्होंने इस अस्पष्टता को दूर करने के लिये इसी सत्यापन-सिद्धान्त के प्रतिपादन को **तार्किक** परिवेश में रखने की चेष्टा की है। इसके लिये प्रथमतः वह एक नया नामकरण करते हैं जिसे **निरीक्षण कथन** (Observation Statement) कहते हैं। इस उक्ति से वह उन कथनों को सूचित कर रहे हैं जो किसी वास्तविक या संभव अनुभव में जो प्राप्त हुआ है उसे व्यक्त करें। अर्थात्, किसी विशेष अनुभव-सूचक कथन को **निरीक्षण कथन** कहा गया है। वे परीक्षणीयता के सिद्धान्त की इस **निरीक्षण कथन** के द्वारा स्पष्ट करने की चेष्टा करते हैं। उनके अनुसार इस परीक्षणीयता सिद्धान्त का कहना है कि कोई अर्थपूर्ण तभी है जब वह परीक्षणीय हो, तथा वह परीक्षणीय तब होता है कि जब इस **कथन** तथा अन्य कुछ आधारों (Premies) के मेल से किसी **निरीक्षण कथन** (Observasion-Staterment) को उससे निकाला जा सके, (Deduce)—वह भी इस शर्त पर कि वह निरीक्षण-कथन केवल उन आधारों से पृथक रूप में बिना दिये हुए कथन के मेल के न निकाला जा सके। उदाहरणतः 'वह पुस्तक दूसरे कमरें में हैं'—इस वाक्य को लें। यह वाक्य अर्थपूर्ण हैं क्योंकि यह परीक्षणीय है। यह परीक्षणीय कैसे है? 'वह पुस्तक' दिखाई देती है—यह निरीक्षण कथन है (Observation Statement) क्योंकि इसमें विशेष अनुभव में जो अनुभूत होता है वह व्यक्त है। दिया

Scanned with CamScanner

Scanned by TapScanner

हुआ कथन है 'वह पुस्तक दूसरे कमरें में हैं' इस कथन को दूसरे आधार वाक्यों के साथ जोड़ें 'दूसरे कमरे में जाकर देखें' तथा 'कमरें में दिखाई देने के सभी उपकरण हैं', तो इन सभी वाक्यों के मिलाने से निरीक्षण-कथन 'वह पुस्तक दिखाई देती हैं' निकल आता है जब कि यह निष्कर्ष केवल 'उन कमरे में जाकर देखें और कमरे में दिखाई देने के सभी उपकरण हैं' से नहीं निकलता। इसका अर्थ हैं कि दिया हुआ कथन परीक्षणीय है, अतः अर्थपूर्ण है।

एयर ने परीक्षणीयता में **साक्षात्** एवं **परोक्ष** परीक्षणीयता (Direct and Indirect Verification)—दोनों को स्वीकारा है, तथा संशय तथा आपत्तियों के आलोक में इस सिद्धान्त का अन्ततः एक तार्किक प्रतिपादन किया है। वैसे सामान्यतः तो यह कहा ही जा सकता है कि एयर के अर्थ के सत्यापन-सिद्धान्त का कहना यही है कि कोई कथन अर्थपूर्ण तभी है जब वह या तो पूर्णतया विश्लेषणात्मक हो, और यदि वह आनुभविक है तो वह अर्थपूर्ण तभी होगा जब कि सिद्धान्ततः उसकी साक्षात् या परोक्ष अनुभव-परीक्षा की संभावना रहे। इस संभावना को जाँचने का ढंग यही है कि उस कथन तथा अन्य आधारों को मिला कर उनसे कोई निरीक्षण-कथन निकाला जा सके—इस शर्त के साथ कि बिना इस कथन के मेल के मात्र उन आधारों से वह निरीक्षण-कथन न निकले।

किन्तु, यह साक्षात् परीक्षणीयता (Direct Verification) का मापदण्ड हुआ। परोक्ष परीक्षणीयता के लिये इन शर्तों के साथ एक दूसरी शर्त को भी जोड़ना आवश्यक है। **अपरोक्ष परीक्षणीयता** (Indirect Verification) की तार्किक माँगे क्या हैं? इसकी पहली माँग तो वही है जो साक्षात् परीक्षणीयता की है। जिस कथन की अर्थपूर्णता देखनी है, उसे तथा अन्य कुछ आधार वाक्यों को मिला कर यह देखना है कि उनसे कोई निरीक्षण-कथन निकल आता है या नहीं—वह भी इस शर्त के साथ कि वह निरीक्षण कथन केवल **उन** आधार-वाक्यों से पृथक् रूप में न निकले। यह तो परोक्ष परीक्षणीयता की भी पहली माँग हुई जो साक्षात् परीक्षणीयता की भी माँग हैं। इसके अतिरिक्त परोक्ष परीक्षणीयता की दूसरी माँग यह भी है कि उन **दूसरे** आधार-वाक्यों के अन्तर्गत ऐसा कोई कथन न आये जो या तो अपने **विश्लेषणात्मक** न हो, या अपने साक्षात् रूप में परीक्षणीय न हो, या कम-से-कम परोक्ष रूप में परीक्षणीय न हो। इसे उदाहरण से समझने की चेष्टा करें।

मान लें हम इस कथन की अर्थपूर्णता की जाँच कर रहे हैं—'कल रात वर्षा हुई है—इसकी साक्षात् परीक्षा की संभावना नहीं, किन्तु उस कारण यह वाक्य अर्थहीन नहीं हो जाता क्योंकि **परोक्ष** परीक्षा की संभावना है। एयर के अनुसार यह परोक्ष रूप में परीक्षणीय कैसे है—यह देखने के लिये निम्नलिखित मांगों को देखना है। यह वाक्य 'कल रात वर्षा हुई है' के साथ एक अन्य आधार वाक्य को मिलाते हैं 'वर्षा होने पर गढ़े भरे दिखाई देते हैं'—अब इन दोनों वाक्यों के आधार पर 'गढ़े भरे दिखाई दे रहे हैं', को निकाला जा सकता है—और यह एक निरीक्षण कथन है क्योंकि निरीक्षण को ही सूचित कर रहा है। यहाँ वह शर्त भी पूरी है कि यह निरीक्षण कथन—'गढ़े भरे दिखाई दे रहे हैं—' अकेले उस अन्य आधार वाक्य 'वर्षा होने पर गढ़े भरे दिखाई देते हैं' से नहीं निकल आता—हमें जिस वाक्य की अर्थपूर्णता देखनी है (कल रात वर्षा हुई है) उसके साथ जुटने पर ही यह निरीक्षण कथन मिल पाता है। इसके अतिरिक्त 'यहाँ जो एक और मांग है उसकी भी पूर्ति हुई है। मांग है कि हम जिन अन्य आधार वाक्यों की कल्पना करते हैं वे या तो विश्लेषणात्मक हों या साक्षात् या परोक्ष रूप में परीक्षणीय हों। यह दूसरा वाक्य हैं 'वर्षा

Scanned with CamScanner

Scanned by TapScanner

होने पर गढ़े भरे दिखाई देते हैं—यह विश्लेषणात्मक न हो परीक्षणीय तो अवश्य है। अतः यहाँ परोक्ष परीक्षणयीता की सभी मांगों की पूर्ति हुई है—और उस कारण दिया हुआ वाक्य अर्थपूर्ण है।

इस दूसरी माँग को कुछ और स्पष्ट करना वांछनीय है। एयर का कहना है कि जिन वाक्यों का उपयोग हम (दिये हुए वाक्य के अतिरिक्त) आधार वाक्यों के रूप में करते हैं—उन्हें ऐसा नहीं होना है कि वे विश्लेषणात्मक भी न हों और साक्षात् या परोक्ष रूप में परीक्षणीय भी न हों यदि ऐसा हो गया तो दिया हुआ वाक्य अर्थपूर्ण सिद्ध न होगा। उदाहरणतः बहुधा ईश्वर-अस्तित्व की स्थापना के लिये परोक्ष साक्ष्यों का सहारा लिया जाता है—विश्व में व्यवस्था-प्रयोजन आदि के आधार पर इनके कारक ईश्वर क अस्तित्व को स्थापित किया जाता है। अब हम मान लें कि यह कथन देते हैं—**ईश्वर अस्तित्ववान** है। इसकी अर्थपूर्णता है। समर्थक कह सकते हैं कि इस कथन की **अपरोक्ष परीक्षणीयता** (Indirect Verification) की संभावना है। वे एयर की मांगों को इस प्रकार पूरा करेंगे। दो अन्य आधार वाक्यों को लेते हैं 'कारक तथा व्यवस्थापक के चलते ही व्यवस्था दिखाई देती हैं' तथा 'ईश्वर कारक तथा व्यवस्थापक है'। अब इन दोनों आधार वाक्यों को अपने दिये वाक्य 'ईश्वर अस्तित्ववान है' के साथ मिला देते हैं। तो इनसे यह निष्कर्ष निकल आता है कि व्यवस्था तथा प्रयोजन दिखाई देते हैं—और यह एक निरीक्षण वाक्य है। यहाँ यह भी कहा जा सकता है कि यह निरीक्षण वाक्य उन दो अन्य आधार वाक्यों के आधार पर नहीं निकलता क्योंकि व्यवस्था के दिखलाई देने के लिए ईश्वर को केवल व्यवस्थापक ही नहीं अस्तित्ववान होना भी आवश्यक है। अतः यह दावा किया जा सकता है कि यहाँ परोक्ष परीक्षणीयता की मांगों को पूरा किया गया है किन्तु ऐसा हुआ नहीं है क्योंकि यहाँ परोक्ष परीक्षणीयता की दूसरी शर्त का उल्लंघन हो गया है। उन दो अन्य आधार वाक्यों में एक है 'ईश्वर कारक तथा व्यवस्थापक हैं।' यह वाक्य न तो विश्लेषणात्मक है न साक्षात् या परोक्ष ढंग में परीक्षणीय। अतः दिये हुए वाक्य—'ईश्वर अस्तित्ववान है' परोक्ष रूप में परीक्षणीय नहीं है—और इस कारण अर्थपूर्ण नहीं हैं।

अतः एयर के अनुसार कथन अर्थपूर्ण तभी होते हैं जब वे या तो पूर्णतया विश्लेषणात्मक हों या ऊपर बताये अर्थ में उनके साक्षात् या परोक्ष परीक्षणीयता की संभावना हो।

(2) एयर का त्वमीमांसा-निरसन प्रयत्न

Scanned with CamScanner

Scanned by TapScanner